हर सफर खतरों की डगर पर

इस खबर के साथ जो तसवीरें आप देख रहे हैं यह खगड़िया जिले के फरकिया इलाके में बदला घाट और धमहरा स्टेशनों के बीच के दो रेलवे पुलों की है. आप देख सकते हैं कि इन पुलों से होकर रेल गाड़िया नहीं बल्कि आम लोग और सड़क पर चलने वाले वाहन गुजर रहे हैं. दरअसल ये पुल छोटी लाइन की रेल गाड़ियों वाले हैं. पहले इस इलाके में छोटी लाइन की रेल गाड़ियां चलती थीं, मगर हाल के वर्षों में बड़ी लाइन की पटरियां बिछ गयी हैं. अब रेल विभाग जो छोटी लाइन की पटरियों को काफी पहले हटा चुका था, इन रेल पुलों को भी हटाना चाह रहा है क्योंकि ये पुल काफी जर्जर हो चुके हैं. मगर आसपास के दर्जन भर से अधिक गांव के लोग किसी सूरत में इन पुलों को हटाये जाने के पक्ष में नहीं हैं. क्योंकि सड़कविहीन नदियों के जाल वाले इन इलाकों में लोगों के पास आने-जाने के लिए कोई दूसरी राह नहीं है.

फरकिया-5

> कभी-कभार ऐसे हालात बन जाते थे जब एक ओर से पैदल यात्री गुजर रहा होता था और सामने से अचानक ट्रेन आ जाती थी. ऐसे में या तो यात्री घबराकर पानी में छलांग लगा देता या रेल से टकराकर गिर जाता.

जान जोखिम में डाल कर इस पुल से गुजरते हैं ग्रामीण

इस रेल पुल से ट्रैक्टर को गुजरते देखना ही अपने-आप में भयावह अनुभव है.

बदला घाट स्टेशन के बाद शुरू हो जाता है बिना सड़कों वाला इलाका.

दो-दो दिन तक खड़े रहते हैं ट्रैक्टर तब जाकर आता है उनका नंबर.

पुष्यमित्र

खगड़िया जिले के चौथम और बेलदौर प्रखंडों के बीच सिमटे इस पूरे इलाके में ऐसे हालात होने की असली वजह यह है कि यहां सड़कों का नामोनिशान नहीं है. इस इलाके से कोसी और बागमती नदी बहुत करीब से गुजरती है. कई दफा दोनों नदियां आपस में मिल जाती हैं और कई बार अलग हो जाती हैं. पूर्वी कोसी तटबंध भी इस जगह से थोड़ी ही दूर पहले कोपड़िया के बाद खत्म हो जाता है. यहां से बदला घाट तक का इलाका नदियों का अभयारण्य सरीखा है. ऐसे में सरकार ने इन इलाकों में सड़क निर्माण को असंभव मान लिया है. लिहाजा इलाके के दसियों हजार लोग इस इलाके से गुजरने वाली रेल की पटरियों पर ही निर्भर हैं.

तीन बदनाम स्टेशन

कोपड़िया, धमहरा और बदला घाट के स्टेशन इस रूट के सबसे बदनाम स्टेशन रहे हैं. जब इन इलाकों से छोटी लाइन की गाड़ियां गुजरती थीं तो स्थानीय लोग अक्सर चेन पुल कर गाड़ियों को रोक लेते थे और जब तक एक-एक यात्री ट्रेन पर चढ़ नहीं जाते लोग गाड़ियों को आगे बढ़ने नहीं देते. मगर जो लोग इन इलाकों की परिस्थितियों से अवगत थे, वे समझते थे कि यहां के लोगों के लिए रेल गाड़ियां ही परिवहन का एकमात्र साधन है. अगर यह ट्रेन छूट गयी तो इन्हें अगली गाड़ी के लिए लंबा इंतजार करना पड़ेगा.

होते रहे हैं हादसे

इन इलाकों के लोगों को जब आसपास के गांव या प्रखंड मुख्यालय जाना पड़ता है तो रेल की पटरियों का किनारा और रेलवे पुल ही इनके लिए रास्ते बनते हैं. मगर रेल पुलों की जो हालत है आपके सामने है. एक पुल जिससे ट्रैक्टर गुजर रहा है वह कमजोर हो चुका है और उसके एक तरफ की रेलिंग गिर चुकी है. दूसरा पुल तो दोनों तरफ से बिना रेलिंग के है. यह तकरीबन डेढ़ सौ मीटर लंबा है. इतने लंबे रास्ते पर बलखाती नदी के नीचे बिना रेलिंग वाले पुल से गुजरना हमेशा खतरनाक अनुभव होता है. लोग भगवान का नाम लेकर ही गुजरते हैं. कई दफा दो साइकिल या मोटरसाइकिल आमने-सामने से आ जाते हैं तो एक दूसरे को रास्ता देने में दुर्घटनाएं हो जाती हैं. स्थानीय लोगों का कहना है कि कई साइकिल सवार और मोटरसाइकिल सवार इससे गिर कर मर चुके हैं. कुछ बच्चों की भी गिरने से मौत हो गयी है.

1981 में हुई थी भीषण रेल दुर्घटना

जब तक इस इलाके से छोटी लाइन की गाड़ियां गुजरती थीं ये पुल काफी खतरनाक साबित होते थे. वैसे तो लोग रेल गाड़ी के टाइम को देखकर ही इन पुलों को पार करते थे. मगर आम तौर उन दिनों भी रेल गाड़ियां टाइम की पाबंद नहीं होती थीं. ऐसे में कभी-कभार ऐसे हालात बन जाते थे जब एक ओर से पैदल यात्री गुजर रहा होता था और सामने से अचानक ट्रेन आ जाती थी. ऐसे में या तो यात्री घबराकर पानी में छलांग लगा देता या रेल से टकराकर गिर जाता. पास के गांव बलकुंडा के एक व्यक्ति ने बताया कि एक दफा एक व्यक्ति भैंसों का झुंड लेकर रेलपुल पार कर रहा था. तभी सामने से ट्रेन आ गयी. वह व्यक्ति तो रेलगाड़ी देखकर पानी में कूद गया, मगर बेगुनाह भैंसें रेलगाड़ी से टकराकर पानी में गिरती चली गयीं. उस हादसे में दसियों भैंसे मारी गयीं, भैंस के साथ जा रहा व्यक्ति संयोग से बच गया क्योंकि उसे तैरना आता था. लोग बताते हैं कि 1981 में इस पुल पर हुई भीषण रेल दुर्घटना जिसमें एक अनुमान के मुताबिक पांच से आठ सौ लोगों की जान गयी थीं, भैंसों के कारण ही हुई थीं. भैंसों को बचाने के चक्कर में ट्रेन ड्राइवर ने अचानक ब्रेक लगाया और ट्रेन की सात-आठ बोगियां पानी में गिर गयीं.

दर्जन भर घाटों पर बाहुबलियों का दबदबा

इन रेल की पटरियों के अलावा इस इलाके में शेष यातायात नावों के सहारे होता है. पूरे चौथम प्रखंड में दर्जन से अधिक घाट हैं, जिनकी बंदोबस्ती कहने को मल्लाह समितियों के नाम पर होती है. मगर बाद में इलाके के बाहुबली समितियों से बंदोबस्ती खरीद लेते हैं. इन तमाम घाटों पर नाव इलाके के बाहुबलियों की मरजी से चलते हैं और ये लोगों से मनमाना किराया वसूलते हैं. किराया इतना महंगा होता है कि आम तौर पर इस इलाके का कोई गरीब इंसान इन नावों से सफर करने को प्राथमिकता नहीं देता. उसे इन नरहे(बिना रेलिंग के) पुलों के सहारे जान जोखिम में डाल कर सफर करना ज्यादा मुफीद मालूम होता है. इन नावों पर फसल ढोने वाले ट्रैक्टर या चार चक्के वाली सवारियां ही पार होती हैं. इन्हें नदी पार कराने के बदले किराये के रूप में 450 रुपये वसूले जाते हैं.

आईएम4चेंज मीडिया फैलोशिप के तहत प्रकाशित

कोई भी व्यक्ति, जिनका आविष्कार तुच्छ है या जो ऐसा दावा करता है,
जो सुस्थापित प्राकृतिक नियमों के विपरीत है, वे पेटेंट संबंधी आवेदन देने योग्य नहीं हैं.